Date: / /

प्रौढ़ शिक्षा के उद्देश्य →

सामान्य शिक्षा का उद्देश्य विद्यालयी शिक्षण प्रमाण-पत्र तथा स्नातकोत्तर उपाधियों तक ही सीमित रहता है। तथा शिक्षार्थियों का उद्देश्य यही रहता है। कि वे इन्हें प्राप्त कर नौकरियों के योग्य स्वयं को घोषित कर सके पढ़ाए गये अधिकांश विषयों का उपयोग एक सामान्य छात्र अपने जीवन काल में नहीं कर पाता तथा कुछ लोग तो नौकरियाँ प्राप्त कर लेने के बाद पुस्तकों की ओर देखना भी पसन्द नहीं करते।

प्रौढ़ शिक्षा और राष्ट्रीय विकास →

आधुनिक समकालीन सन्दर्भों में विशेष रूप से तीसरी दुनिया के देशों के निमित्त प्रौढ़ शिक्षण कार्यक्रम एक सशक्त सम्बल के रूप में प्रस्तुत हुआ है। यह केवल मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ही नहीं करता वरन् सामाजिक सामुदायिक, सांस्कृतिक प्रजातान्त्रिक एवं राष्ट्रीय महत्वाकांक्षाओं पर भी बल देता है। यह लोगों को वे जानकारियाँ सूचनाएँ तथा ज्ञान प्रदान करता है। जिसकी आवश्यकता उन्हें दिन-प्रति-दिन अपने घर में परिवेश में कार्यक्षेत्र अथवा व्यवसाय में पड़ती है।

Date: / /

आर्थिक विकास →

किसी भी देश का अर्थ-व्यवस्था उसके उद्योगों पर आधारित होती है। आधुनिक उद्योगों का ताना-बाना नवीनतम तकनीकों से परिपूर्ण है जो कम्प्यूटर विद्युत उपकरणों तथा अत्याधुनिक मशीनों का बुना हुआ है। निरक्षरता की वर्तमान स्थिति के कारण भारत का अधिकांश वर्ग आधुनिक तकनीकों से अनभिज्ञ है तथा इन पर काम करना नहीं जानता जिसके फलस्वरूप औद्योगिक क्षेत्रों में हमारा देश काफी पीछे है।

सामाजिक तथा आर्थिक असमानताओं को दूर करना →

भारत का यह दुर्भाग्य रहा है। कि स्वतन्त्रता-प्राप्ति के पश्चात यद्यपि कई क्षेत्रों में हम आगे बढ़े हैं किन्तु यह भी सत्य है कि निर्धन और अधिक निर्धन हो गये हैं। और धनाढ्य अधिक धनी। इस असमानता का कारण मूल रूप से निरक्षरता है जो निर्धनों को अपने जाल में जकड़े हुए है। अनेक प्रयासों के बावजूद भारतीय समाज में व्याप्त सामाजिक तथा आर्थिक असमानताएँ बढ़ती ही जा रही है। प्रशासनिक तथा राजकीय स्तरों से सामाजिक असंगतियों को दूर नहीं किया जा सकता है।

Date: / /

भारत तथा अन्य देशों में प्रौढ़ शिक्षण कार्यक्रम →

किसी भी विकासोन्मुख सभ्यता के लिए साक्षरता एक आवश्यक शर्त है तभी वह अपने समय में होने वाले परिवर्तनों से स्वयं को जोड़ सकती है। तथा आर्थिक सामाजिक, प्रजातांत्रिक विकास से परिपूर्ण हो सकती है। बदलती तकनीकों नए अनुसंधानों नई विचारधाराओं से परिचित होकर ही कोई भी व्यक्ति विकास-मार्ग पर चल सकता है।

भारत में प्रौढ़ शिक्षा का इतिहास अत्यन्त पुराना है। भारतीयों की निरक्षरता निवारण हेतु श्री पुड ने सन 1854 में लोगों का ध्यान आकर्षित किया था उनका सुझाव था कि देशी भाषाओं के माध्यम से ही लोगों को शिक्षण दिया जाए।

1- प्रौढ़ कक्षाओं की आयु सीमा 10-40 वर्ष रखी जाए।

2- 25 वर्षों में बारह करोड़ से अधिक को शिक्षण दिया जाए।

3> प्रौढ़ शिक्षण हेतु व्यय राशि तीन करोड़ प्रति वर्ष की दर से रखी जाए।

4- प्रौढ़ शिक्षण हेतु व्यय राशि सरकार द्वारा चलाए जाएँ तथा स्वयंसेवी संस्थाएँ इस कार्यक्रम को सफल बनाने में अपना सहयोग प्रदान करें।

प्राचार्य
मीरा मेमोरियल महाविद्यालय
शिक्षण एवं प्रशिक्षण संस्थान
पाण्डेयपुर, ताण्डा, बलिया